Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 411-417 *Journal Website www.academejournal.in*

मधु कांकरिया के उपन्यासों में संवेदनात्मक : एक अध्ययन

डॉ. प्रियंका कुमारी

सहायक प्राध्यापक
हिन्दी, महात्मा गाँधी, माहविद्यालय, सुन्दरपुर, दरभंगा

सारांश :–

आधुनिक हिन्दी साहित्य की अग्रणी और प्रतिष्ठित लेखिका मधु कांकरिया के सभी उपन्यासों में अलग-अलग कथाएँ वर्णित हैं। संवेदनात्मक स्तर पर, उनके सभी उपन्यास पाठकों पर अमिट छाप छोड़ने में सक्षम हैं। मधु कांकरिया के लगभग सभी उपन्यासों में संवेदना को काफी जीवंतता से चित्रण किया गया है। कांकरिया हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत संवेदनशील लेखिका हैं, जिनके उपन्यासों में संवेदना समाज के हाशिए पर पड़े लोगों, महानगरों की घुटन, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता और आधुनिक जीवन की विसंगतियों में रची-बसी है। कांकरिया के उपन्यासों में संवेदना केवल भावनाओं का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह यथार्थ की तीखी पड़ताल है, जो पाठक को सोचने पर मजबूर करती है। उपन्यास में संवेदना लेखक के हृदय की उन अनुभूतियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति है, जो पाठकों को पात्रों के सुख-दुःख से जोड़ती है। कांकरिया के उपन्यासों में संवेदना के बहुआयामी रूप देखने को मिलती है, जो सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती है।

मुख्य शब्द :- संवेदनात्मक अध्ययन, स्त्री-अस्मिता, नक्सलवादी आंदोलन, सामाजिक यथार्थ, वेश्याजीवन की त्रासदी, नशाखोरी।

प्रस्तावना :–

हिन्दी कथा-साहित्य भारतीय समाज के जिस संपूर्णता के साथ अभिव्यक्त करने में समर्थ है, उतना शायद कोई और साहित्यिक विधा नहीं। एक समय था जब हमारे समाज में सामंती-व्यवस्था थी। उस समय के समाज की संवेदना को अभिव्यक्ति करने हेतु महाकाव्य विधा की उत्पत्ति हुई। तथापि जब पूंजीवादी सामजिक व्यवस्था का पदार्पण हुआ तब यह कार्य उपन्यासों ने किया है। साहित्य के माध्यम से जो सामाजिकों को संदेश प्रेषित किया जाता है, उसे साहित्य का कथ्य कहा जाता है। साथ ही उसके माध्यम से समाज की सुषुप्त संवेदना को जगाने की कोशिश की जाती है। जिस समाज की संवेदना मर जाती है, वह समाज भी लगभग मृतप्राय ही हो जाता है। ऐसी स्थिति में साहित्यकार समाज की संवदेना को जाग्रत कर मानवीय चेतना की

© Copyright @ Authors

संपन्न समाज की स्थापना करता है। बात जब उपन्यास की आती है तो इस विधा ने भारत के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक सत्य को संपूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया है। यही कारण है कि आधुनिक उपन्यासों के सदंर्भ में प्रेमचंद ने कहा है- "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्रमात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"[1] इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि कथासम्राट प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मानवतावाद की स्थापना की है। वे मानव-जीवन को महत्त्वपूर्ण मानते हैं, चूँकि उपन्यास मानव-जीवन का प्रतिबिंब होता है। प्रेमचंद के मंतव्यों से प्रभाव ग्रहण कर अनेक उपन्यासकारों ने अपने लेखक की दिशा तय की। उपन्यास विधा में अनेक आधुनिक लेखिकाओं ने भी मानव-जीवन के विविध आयामों का यथार्थ चित्रण किया है। ऐसी ही लेखिकाओं में एक-चर्चित नाम है-मधु काँकरिया। मधु जी समकालीन उपन्यास लेखिकाओं में अपनी सशक्तता एवं अर्थवत्तावपूर्ण लेखन के लिए अलग पहचान बनायी है। वे अपने उपन्यासों में प्रभावी कथ्य के साथ चरित्र को महत्त्व देती है। एक और कथ्य और चरित्र की उदात्तता तथा उत्कृष्टता तो दूसरी ओर विशेषताओं के कारण उनके उपन्यास अत्यंत रोचक तथा प्रभावोत्पादक बन पड़े हैं।

सामाजिक सरोकर :–

सामाजिक सापेक्षता ही किसी रचना अथवा रचनाकार को प्राणवान बनाता है। यही रचना के कालजयी होने तथा रचनाकार की अमरता का कारण है। यही रचनाकार का मूलभूत रचनात्मक उद्देश्य है। इस दृष्टि से मधु जी बेहद प्रासंगिक उपन्यास लेखिका है। उन्होंने कुल छह उपन्यासों का सृजन किया है, जिनमें से तीन उपन्यासों में मारवाड़ी जाति का यथार्थ वर्णन मिलता है। देश की सबसे सफल व्यवसायी जाति मारवाड़ी है। भारत की अर्थव्यवस्था के आधुनिक क्षेत्र की आधी आबादी से अधिक संपत्ति पर राजस्थान की उत्तरी भाग के मारवाड़ियों का नियंत्रण है। डॉ. गिरिजा शंकर के अनुसार- "उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध से ही प्रवासी व्यापारी वर्ग बहुत संपन्न और प्रभावशाली बनना शुरू हो गया था।"[2] 'खुले गगन के लाल सितारे' लेखिका का प्रथम उपन्यास है, जिसमें अमरनाथ बाबू के पिता 1967 में मैट्रिक की पढ़ाई के बाद घर की खस्ताहाली के कारण पढ़ाई छुड़ाकर अमरनाथ को कलकत्ता पैसा कमाने के लिए भेज दिया। वणिक पुत्र को व्यवसाय के लिए पूँजी की नहीं, हौसले की आवश्यकता होती है। वह तो मरे चूहे से भी कमाकर दिखा सकता है। सालों उन्होंने किसी परिचित की बाजार में स्थित गद्दी के बरामदे में सोकर गुजारे। अमरनाथ रात को पढ़ते दिन में पीतल की पट्टी पर काम करते। 20 वर्ष की उम्र तक उनकी परिश्रम और लगन देखकर मालिक ने चार आने की साझेदारी पर अमरनाथ को अपने साथ रखा।

© Copyright @ Authors

Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 411-417 *Journal Website www.academejournal.in*

बाद के वर्षों में अमरनाथ बाबू ने अपनी निजता की परिधि बढ़ाई और स्वयं को असहयोग आंदोलन तथा स्वाधीनता संग्राम से जोड़ा। गांधीजी के प्रभाव में वे कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बने गये। उनका गाँधी-प्रेम जबरदस्त था। जिस दिन बापू शहीद हुए, उसी दोपहर जब वे विपन्न मन से अपनी गद्दी में पुरानी किताबें लेने पहुँचे तो देखकर अवाक रह गए कि बाहर बंद की पट्टी और भीतर कारोबार सुचारू रूप से चल रहा है। गिरिजा शंकर के मतानुसार- "धन-संपन्न हो जाने पर मारवाड़ी व्यापरियों ने भी अंग्रेज की भाँति अपने रहन-सहन में कुछ परिवर्तन आरभ किया।"[3] सट्टा के प्रति उसका आकर्षण बढ़ने लगा। शीघ्र अमीर बनने की अभिलाषा से पुराने सारे मूल्य ध्वस्त हो गये। 'सलाम आखिरी' नाम उपन्यास में 'मन्नालाल एंड सुरेका फार्म' के मालिक मन्नालाल की सट्टा बाजी के कारण कंपनी ऊँचाई की बुलंदी से गिरकर ध्वस्त हो गई।

स्त्री-जीवन की त्रासदी और स्वातंत्र्य की खोज–

मधु काँकरिया के लगभग सभी उपन्यासों में स्त्री-जीवन की त्रासद अभिव्यक्ति हुई है। वह निरंतर स्त्री-अस्मिता से संबंधित प्रश्नों को अत्यंत मजबूती से उठाती रही है। मधुजी के अनुसार स्त्री के लिए स्वतंत्रता कर्त्तव्य एवं दायित्व एवं दायित्व-बोध लेकर आती है। स्त्री अगर स्वतंत्र होना चाहती है तो उसे अपने कर्त्तव्य और दायित्व का भी उतना ही ज्ञान होना चाहिए। इसीलिए स्वतंत्रता की आदर्श स्थिति क्या हो? इसके बारे में सोचना होगा। आज तक स्त्री ने जितनी भी स्वतंत्रता हासिल की है वह संघर्ष करके ही हासिल की है। मधुजी के स्त्री-पात्र मणि। 'खुले गगन के लाल सितारें' की सुकीर्ति 'सलाम आखिरी, की संघमित्रा, 'सेज पर संस्कृत, की दीपशिखा हम यहाँ थे के स्त्री पात्र इत्यादि अपनी प्रतिभा और संकल्प-शक्ति से नयी शक्ति और चुनौती के रूप में उभरती है। ये स्त्रियाँ रूढ़ समाज से टकराकर अपने भावात्मक स्तर पर लहुलुहान करते अपने अस्तित्व को नये सिरे से परिभाषित करती है।

मधु के 'सलाम आखिरी' तथा 'सेज पर संस्कृत' दोनों उपन्यासों में नारी-विमर्श का चरम रूप दिखाई पड़ता है। इन उपन्यासों में नारियों की जीवन गाथा है, जो समाज द्वारा तिरस्कृत मानी जाती है। 'सलाम आखिरी' में वेश्या-जीवन की त्रासदी का यथार्थ अंकन हुआ है। भारतीय समाज में जहाँ 'यत्र नार्यस्तु पुजन्यते' कहा जाता है, वहाँ उस नारी को कुछ भीषण कारणों से अपने तन को बेचने के लिए अभिशप्त होना पड़ता है। यही व्यवस्था की सबसे बड़ी-क्रूरता है।

भारतीय समाज में वेश्याओं की उपस्थिति चिरकाल से चली आ रही है। बदल रहा है केवल समाज का उनके प्रति दृष्टिकोण और वेश्यओं की जीवन-शैली आलोच्य कृति की भूमिका में मधु जी लिखती है- "समाज में वेश्याओं की मौजूदगी एक ऐसा चिरंतर सवाल है, जिससे हर समाज, हर युग में अपने-अपने ढंग से जूझता रहा है। वेश्या को कभी लोगों ने सभ्यता की जरूरत बताया,

© Copyright @ Authors

कभी कलंक बताया, कभी परिवार की किलेबंदी का 'बाई-प्रोडक्ट' कहा और कभी सभ्य, सफेद पोश दुनिया का गटर जो उनकी काम कल्पनाओं और कुंठाओं के कीचड़ को दूर अंधेर में ले जाकर डंप कर देता है।"[4]

नक्सलवादी आंदोलन का सच :–

लेखिका मुध काँकरिया ने बंगाल के नक्सलवादी आंदोलन को बहुत करीब से देखा था। इसी कारण उसके अंतर्निहित सत्य का उद्धाटन उन्होंने अपने उपन्यास-'खुले गगन के लाल सितारे' में किया है। उपन्यास में नक्सलवादी आंदोलन की शुरुआत, उसकी कार्यप्रणाली, क्रांतिकारियों का संघर्ष, राजनितिक हस्तक्षेप एवं नक्सलवादी आंदोलन के कमजोर पड़ने के कारणों का खुलासा किया गया है। 1976 ई. के बसंत में पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में नक्सलवादी ग्राम में प्रकाश की पहली पगडंडी दिखाई दी।

1970 का दशक वास्तव में मुक्ति का दशक था। ध्रुपद मजुमदार ने नारा दिया था- "चीन का रास्ता हमारा रास्ता नक्सलवादी लाल सलाम चेयरमैन माओ जिंदाबाद। डाउन विद अमेरिकन डम्पी रियलिज्म। कॉलेज के छात्र माओत्से तुंग की रेड बुक, मार्क्स एंगेल्स की पचास पृष्ठों वाला कम्यूनिष्ट घोषणा पत्र पढ़ते। सर्वहारा, समानता-वर्ग शत्रु, सामूहिकाता में उनका विश्वास जागता। ऐसे साहित्य को पढ़कर उनका उत्साह जागता, जिस घोषणा पत्र में संसार में कितनी उथल-पुथल मचायी है, रुस, चीन वियतनाम, अर्जेन्टीना, चेकोस्लोवाकिया में अब भारत की बारी है।"[5] तथा इस देश में खूनी क्रांति के साथ ही साथ जरूरत महसूस की गयी एक सांस्कृतिक क्रांति की। मधुजी ने यह बतलाने की चेष्टा की है कि प्रबुद्ध लोगों की गिरफ्तारियाँ आंदोलन को दबाने हेतु की गई है। उसमें अमत्र्य सेन को भी नक्सलवादी समझकर गिरफ्तारी का हुक्म सुनाया गया, लेकिन अमत्र्य सेन ने उस आर्डर को नहीं माना। शानदार बात यह है कि पुलिस और सत्ताधारी जितना निरंकुश होता है, उसी मात्रा में उतने ही वेग से युवा बनते हैं- नक्सलवादी। जलपाईगुड़ी एवं उत्तर बंगाल के कुछ इलाकों में संभावनाशील नक्सलवादियों द्वारा गुरिल्ला युद्ध का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए दी गई। उस समय इंदिरा गांधी ने पूरे देश में आपातकाल की घोषण कर दी। इमरजेंसी में लागू मीसा कानून ने पुलिस को अपरिमित शक्ति दे दी। पुलिस हर किसी को मीसा कानून के तहत जेल में डाल रही थी। इस कानून का उपयोग खूनी, हत्या, हत्यारों, लुटेरों, देश की सुरक्षा के लिए घातक खूँखार आतंकवादियों आदि से निपटने के लिए जितना नहीं हुआ, उससे कहीं अधिक नक्सवादियों का समूल उन्मूलन करने के लिए हुआ। एनकांउटर के नाम पर कितने ही नक्सली मारे गए। मधु जी ने नक्सलवादी आंदोलन का उठना, उसका परवान चढ़ना......ठिठकना और ढ़हना सभी कुछ देखा था उनके भाई इसी

© Copyright @ Authors

आंदोलन से जुड़े थे। इसीलिए वे बताती है कि 'डाउन विद अमेरिकन इम्पीरियलिज्म' जैसे नारे के कारण यह आंदोलन जन-जन तक नहीं पहुँचा। यह क्रांति-दर्शन प्रबुद्ध वर्ग या छात्रो तक जाकर रुक गया। यहाँ की भूखी नंगी जनता सिर्फ रोटी और गरीबी की भाषा समझती है। वह चीन और माओ को नक्सलवाद और श्री काकुलन को नहीं पहचानती।"[6] यहाँ की रुढ़ियों में जकड़ी धर्मांध, भीरू, कूपमंडूक और भूखी जनता की नब्ज पहचानती श्रीमती इंदिरा गांधी ने नारा दिया। 'गरीबी हटाओ' और वे जीत गईं।

इस तरह उपन्यास में लेखिका इस नतीजे पर पहुँचती है कि 'हमारे देश में भंगी और कम्यूनिस्ट पैदा नहीं होते, बना दिये जाते हैं।"[7] 'खुले गगन के लाल सितारे' नक्सली आंदोलन की जीवंत दस्तावेज है। यह इतिहास है नक्सली आंदोलन का।

नशाखोरी: एक अभिशाप :–

नशाखोरी भारतीय समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है, जो धन, धर्म और स्वास्थ तीनों का सर्वनाश कर रहा है। हम एक ओर आज स्वयं को अति आधुनिक होने का दंभ भरते हैं, लेकिन वहीं दूसरी ओर अपनी प्रवृत्तिगत खनाबदोषी से स्वयं को मुक्त नहीं करा पा रहे हैं। 'स्वातंत्र्योत्तर समाज में हमने जहाँ विकास और प्रगति की है, वहीं अनेक व्याधियाँ भी अर्जित की हैं, जिसका सर्वप्रमुख कारण है- नशाखोरी।

मधु काँकरिया ने अपने तीसरे उपन्यास 'पत्ताखोरी' में नशाखेरी को ही विषय बनाया है तथा इसकी परिणति का यथार्थपरक उद्घाटन किया है। कथानक का प्रधान पात्र आदित्य है, वह हेमंत बाबू और बनश्री का पुत्र है। माता-पिता दोनों के नौकरीपेशा होने के कारण आदित्य को कुसंगति का पर्याप्त अवसर मिल जाता है। परिणामस्वरूप वह 'पत्ताखोर' (नशेड़ी) हो जाता है। एक बार तो पन्द्रह रुपये का एक पत्ता खरीदने के लिए आदित्य अपने ही घर में चोरी करता है। माता-पिता के रुपये, अपनी घड़ी, अपनी किताबें, यहाँ तक कि गणेश जी की पीतंल की मूर्ति तक उसने बेच डाली। चार महीने में ही नशे ने आदित्य को अपने गिरफ्त में ले लिया। निर्माणाधीन मकान या खोलाबड़ियों में वह नशापान करने लगा। लेखिका कहती है कि "दिन से रात बनता जा रहा था। शिव से शव बनता जा रहा था आदित्य।"[8]

एक दिन पन्नी, मोमबत्ती और माचिस के जरिये नशा करते आदित्य को पिता देख लेते हैं। अपने ही अंश के आदमी न बन पाने के दुःख से वे तड़प उठते हैं। गुस्से से उस पुड़ियाँ को फाँक लेते हैं। आदित्य अपनी करतूत पर शर्मिंदा होता है- लेकिन अबतक बहुत देर हो गयी थी। वह अबतक गंभीर नशाखोर हो चुका था। गांजा से चरस, अफीम और ड्रग्स लेना उसके लिए आम बात हो गई

© Copyright @ Authors

थी। वह बीमार होता है। लंबे समय तक इलाज होता है, तब जाकर वह नार्मल हो पाता है। लेखिका कहती है कि 'नशे के लिए व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार है। नशे के व्यापारी जिम्मेदार है, या हमारी सामाजिक, आर्थिक वास्तविकताएँ, यह कहना कठिन है।"[9]

हमारे समय की अत्यंत सजग और सचेत लेखिका मधु कॉंकरिया ने इस उपन्यास में इन्हीं 'ज्वलंत सवालों को खड़ा किया है। यह उपन्यास नशाखोरी के सच को सामने लाते हुए उसकी परिण्ति पर विचार करने के लिए पाठकों को प्रेरित करता है।

समग्र-जीवन दृष्टि :–

मधु कॉंकरिया समकालीन राज और समाज के प्रति अत्यंत सजग है। उनकी दृष्टि अत्यंत यथार्थवादी है। मधुजी के लेखन में यथार्थ दृष्टि एवं वैकल्पि समाज के व्यावहारिक चिंतन में एक सैद्धातिक पक्ष भी कार्यरत हैं। इसे हम जीवन-दृष्टि कहना चाहते हैं जो उनके अध्ययन एवं चिंतन से बनी है। मधुजी साहित्य की छात्रा नहीं रही है। उनका लेखन अनुभव और संवेदना के ताप से निकला है, विचारधाराओं या वैचारिक आग्रहों से नहीं। उनकी उसली पूँजी उनके अनुभव हैं। उनके पात्र हाशिये पर जीवन जीने वाले समाज के उपेक्षित लोग हैं। उनके साहित्य से गुजरते हुए लगा है कि वे मानवतावाद, मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववाद से जुड़ी कथाधारा को आगे बढ़ाती है।

मधु कॉंकरिया आर्थिक स्वातंत्र्य को जीने का प्रथम आधार मानती है। स्त्री की पहचान के लिए जेब भरी होनी आवश्यक है। 'सेज पर संस्कृत' की संघमित्रा और 'खुले गगन के लाल सितारे' की 'मणि', 'सलाम आखिरी' की कालेज गर्ल तथा 'हम यहाँ थे' की दीपशिखा इत्यादि स्त्री पात्र अपनी आर्थिक स्वाधीनता के लिए युद्धस्तर पर क्रियाशील दिखती हैं।

'हम यहाँ थे' उपन्यास में मधुजी ने दीपशिखा के माध्यम से स्त्री-संघर्ष के यथार्थ अंकन किया है। 'दीपशिखा आरंभ सं ही स्वतंत्र विचारों वाली महिला है, जिसके कारण उसे कदम-कदम पर लड़ना पड़ता है। लड़ाई की यह शुरुआत तो उसके घर से ही शुरु हो जाती है, जहाँ वह वैचारिक रुप में माँ से टकराती है। शादी के बाद उसका यही संघर्ष प्रति के साथ चलता है। अंततः वह पति से अलग हो जाती है। कंप्यूटर कोर्स करती है तथा एक दफ्तर में डाटा ऑपरेटर की नौकरी करती है।"[10] यह अलग सवाल है कि वहाँ भी उन्हें पुरुषवादी विचारों से लड़ना पड़ता है। इस लेखिका की दृष्टि में 'स्त्री-स्वातंत्र्य का सबसे मजबूत कड़ी है आर्थिक स्वाबलंवन।"[11]

निष्कर्ष–

इस उपन्यास के माध्यम से मधु कॉंकरिया नक्सलवादी आंदोलन का समर्थन करती नजर आती हैं। उनका मानना है कि यह एक सार्थक आंदोलन था, जिसमें उत्साही युवाओं ने मुख्यधारा के

© Copyright @ Authors

लोगों यथा-जमींदार, पूँजीपति, नेता तथा ऑफिसरों के खिलाफ लड़ाई का बिगुल फूँका था। इनकी दुश्मनी आम जनता से नहीं बल्कि उन शाषकों से थी, जो अंधी और बहरी व्यवस्था के संपोषक थे।

समग्रत: मधु काँकरिया के सभी उपन्यास बेहद महत्वपूर्ण, प्रासंगिक, पठनीय तथा प्रभावोत्पाकद हैं। लेखकीय चेतना के प्रति वे अत्यंत सजग हैं, तभी तो समकालीन समाज की तमाम समस्याएँ उनके उपन्यासों के मूल में स्थित हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से अनेक विमर्शों यथा-दलित-विमर्श-स्त्री विमर्श, आदिवाशी-विमर्श का समर्थन किया है। वह समजा की सोइ हुई चेतना को जगाने में सर्वथा समर्थ है।

संदर्भ–

1. कुछ विचार- प्रेमचंद, पृ. 38
2. मारवाड़ी समाज- डॉ. गिरिजाशंकर, पृ. 166
3. वही, पृ. 167
4. सलाम आखिरी - मधु काँकरिया (भूमिका से)
5. खुले गगन के लाल सितारे- मधु काँकरिया पत्र-112
6. वही, पृ. 93
7. वही, कवर पृ.
8. पत्ताखोर-मधु काँकरिया पृ. 63
9. वही, आवरण पृ.
10. हम यहाँ थे- मधु काँकरिया, पृ. 91
11. मधु काँकरिया का रचना-संसार,-डॉ. उषा कीर्ति राणावत, पृ. 145

© Copyright @ Authors